□□□□ □□□

जनसत्ता 16 सतिंबर, 2014: लगभग पचास वर्ष पहले की बात है□ वात्स्यायनजी (कवि अज्ञेय) कोट्रालम ग□ हु□ थे□

तब प्रसदि्ध तमलि वदि्वान और भाषाप्रेमी रामस्वामी नायकर (पेरयिार) वहीं थे□ अज्ञेय उनसे मलिना चाहते थे□ अज्ञेय के□कमति्र पेरयिार से पूछने ग□, लेकनि उन्होंने यह कह कर मना कर दयिा कवि‘ेकसिी उत्तरी साम्राज्यवादी लेखकसे मलिना नहीं चाहते□’ मति्र संकुचति होकर लौटे□ तब इस पर अज्ञेय ने उनसे कुछ चर्चा की□ वह आज भी सामयकि है, जब तमलिनाडु केदोनों प्रमुख दलों केसर्वोच्च नेताओं ने हदिी और संस्कृत को उत्तर के साम्राज्यवाद का उपकरण मान कर वरिोध जताया है□

तब डॉ राधाकृष्णन देश केराष्ट्रपतथिे□ वति्तमंत्री कृष्णमाचारी भी तमलि थे□ उस समय हाल तकवदिेशमंत्री भी दक्षणि केकृष्ण मेनन थे□ शक्षिामंत्री दक्षणि केन सही, लेकनि हदिी समर्थकभी नहीं थे□ इन सब हवाले से अज्ञेय ने पूछा, यह कैसा उत्तरी साम्राज्यवाद है जसिमें शासन शखिर पर प्रमुख नीत-िनयिंता दक्षणिी हों! तब मति्र ने कहा, कबिात सांस्कृतकि साम्राज्यवाद की है□ तब अज्ञेय ने पूछा कजिसि आदशिंकराचार्य ने भारत दग्विजिय की, वे दक्षणि केथे□ देश केसबसे उत्तरी तीर्थ बदरीनाथ पर दक्षणि का राज है□ भारत का सबसे ब□ा सांस्कृतकि आंदोलन- भक्त आंदोलन- दक्षणि से फैला□ फरि वेदपाठी वदि्वान जतिने भी हैं, वे काशी केसाथ-साथ कांची को भी उतना ही प्रमाण मानते हैं□ वषि्णु पुराण और भागवत पुराण, दोनों दक्षणि केहैं□ तो भैया, यह उत्तर का साम्राज्य है कहां? पूर्वी क्षेत्र भी देखें, तो वे दक्षणि वाली भंगमिा ही रखते हैं, और कसिी भी हाल में हदिी केसाथ तो नहीं ही हैं□

मति्र से अज्ञेय ने भी वह पूछा था, जो अभी सुब्रह्मण्यम स्वामी ने करुणानधिऔिर जयललता से पूछा है कतिमलि श्रेष्ठतावादी का नाम रामस्वामी नायकर कैसे हुआ, जब कनि ‘राम’ तमलि का है, न ‘स्वामी’, न ‘नायकर’□ दक्षणि केमहानुभावों केऐसे नाम तो आखरि कसिी उत्तर वाले ने नहीं रखे□ इन स्थतियिों, तथ्यों आदकिेमद्देनजर क्या वास्तवकिता कुछ और नहीं हो सकती?

यानी कमिामला कसिी उत्तरी साम्राज्यवाद या हदिी साम्राज्यवाद का न होकर, कसिी ब□ भारी भ्रम का हो? स्पष्टत: तमलि राजनीतआिज भी दशकों पुरानी रू□यिों से जक□ी हुई है□ वडिंबना यह कवि रू□यिां भी उनकी अपनी नहीं, न ही कसिी प्राचीन या स्वदेशी तमलि परंपरा का अंग हैं□ संस्कृत वदि्वत्ता केदो सबसे ब□ केंद्रों में □कस्वयं तमलिनाडु में स्थति है□ यह कोई आज की बात नहीं; सदयिों से दक्षणि भारत संस्कृत का उत्कृष्ट ज्ञानपीठ रहा है□

इससे साफदखिता है कसिंस्कृत का वरिोध कोई ‘तमलि परंपरा’ नहीं है□ मामूली खोजबीन से पता चलता है कयिह तो मात्र सौ साल पहले उपजी राजनीत है□ इसकेजनकमूलत: कोई तमलि वदि्वान या नेता नहीं, बल्कईिसाई मशिनरी थे□ ऐतहिासकि दृष्टसि े यह इतने हाल की घटना है जसिकेसभी प्रमाण

मौजूद है। इनकी पड़ताल मामूली अध्येता भी कर सकता है। यह पड़ताल कि तमिल भाषा, साहित्य और राजनीति के संस्कृत भाषा, भारत देश और हिंदू धर्म के विरुद्ध खड़ा करने का कार्य मिशनरियों और ब्रिटिश शासकों ने किया। जिसे 'द्रविड़ वाद' कहते है, उसका पूरा ताना-बाना, यहां तक कि शब्दावली और मुहावरे भी मिशनरी लेखकों ने तैयार की थे।

किसी मूल तमिल स्रोत में संस्कृत, भारतीयता, या हिंदू धर्म का विरोध नहीं मिलता, जो पिछले कई दशकों से तमिल राजनीति का मूलाधार रहा है। साथ ही यह भी उतना ही अकाट्य है कि द्रविड़ वाद का प्रत्येक तामझाम विविध ईसाई मिशनरी विद्वानों की पुस्तकों में है, कहीं और नहीं! इस सचाई की पूरी परख की जानी चाहिए और नकलिये वाले निष्कर्षों को तमिल जन-गण समेत संपूर्ण भारतीय जनता को बताया जाना चाहिए।

यह इसलिए आवश्यक है कि द्रविड़ वाद समेत हर प्रकार के अलगाववाद की वैचारिकी उन्हीं रूपों में है, जो ईसाइयत-विस्तार के खुले उद्देश्य से मिशनरियों ने तैयार की थीं। तत्कालीन ब्रिटिश शासकों ने 'फूट डालो, राज करो' की अपनी नीति के अंतर्गत उसे प्रचारित करने में सहयोग किया था। कहने का अर्थ यह नहीं कि सारे मिशनरी लेखक षड्यंत्रकारी थे, बल्कि यह कि अपने ईसाई विश्वासों (या अंधविश्वासों) के प्रचार के लिए उन्होंने परिश्रमपूर्वक संस्कृत, तमिल आदि भाषा-साहित्यों का अध्ययन किया, ताकि किसी न किसी प्रकार भारत को हिंदू धर्म के 'अंधकार' से मुक्त कर ईसाइयत के 'प्रकाश' में लाया। यह उन्होंने स्वयं बारंबार दुहराया है कि भारत संबंधी उनके संपूर्ण शोध का लक्ष्य यही था। मैक्स मूलर जैसे गैर-मिशनरी विद्वानों ने भी यहां ईसाइयत-विस्तार को ही अपने विद्वत-कार्य का प्रमुख मकसद बताया था।

इन प्रेरित रूपों की परीक्षा का कार्य आज तक तमिल राजनीतिकों, बुद्धिजीवियों ने क्यों नहीं किया? संभवत: उन्हें भी मार्क्सवादियों और जातिवादियों की तरह विभेदकारी राजनीति की सुविधा की आदत हो गई है। अगर वे मिशनरियों द्वारा तैयार द्रविड़ वाद की नकली वैचारिकता छोड़ दें, तो न सिरे से अपना आधार खड़ा करने का कोई मार्ग उन्हें नहीं सूझता। तब तमिलनाडु के प्रमुख दल हमारे कम्युनिस्टों से भिन्न नहीं, जिन्हें अपनी पिटी-पिटाई लीक छोड़ कर नया सोचने का मार्ग नहीं सूझता।

द्रविड़ वादी अलगाववाद की सचाई अच्छी तरह जानना जरूरी है। न केवल इसलिए कि यह निपट अज्ञान, अनुमान और मनगढ़ंत आधारों पर खड़ी की गई है, बल्कि इसलिए भी कि अंतरराष्ट्रीय मिशनरी शक्तियां आज भी उन विभेदकारी आधारों को नया-नया खाद-पानी देकर बढ़ाने की कोशिश कर रही है। विदेशी पैसे से चलने वाले एनजीओ उद्योग का सबसे बड़ा हिस्सा ईसाई मिशनरी तंत्र ही है, यह तो स्वयं गृह मंत्रालय द्वारा दशकों से दी जाती रही सालाना सूचना से स्पष्ट है।

ध्यान दें कि उस ईसाई संसाधन का एक प्रमुख कार्य अकादमिक, शैक्षिक परियोजनाएं हैं जो 'दलित विमर्श', 'मानव अधिकार शिक्षण', 'गवर्नमेंट ऑफ मार्जिनलाइज्ड', आदि नामों से हर तरह की विभाजनकारी राजनीति को हवा देती है, जिसका उद्देश्य आज भी वही है जो सौ साल पहले था। यानी हिंदू धर्म, भारतीय राष्ट्र को दुर्बल या खत्म करके ईसाइयत का राज-समाज कायम करना। चाहे यह भारत के टुकड़े-टुकड़े करके भी हो। दलितवाद, द्रविड़ वाद, सेक्युलरवाद, माओवाद, अल्पसंख्यकवाद, आदि ऐसा कोई विभेदकारी आंदोलन या विचारधारा नहीं जिसके पीछे यहां मिशनरी समर्थन, संसाधन और सक्रियता न चल रही हो। क्या इस गंभीर सचाई या आरोप की परख नहीं होनी चाहिए?

उदाहरण के लिए, इस द्रविड़ वादी अलगाव और विरोध को ही लें, जो संस्कृत, हिंदी से लेकर भारतीय राष्ट्र की हर सत्ता तक का विरोध करती रहती है। इसका मूल किसी मौलिक तमिल लेखक, विद्वान या शोध में नहीं है। तब किसने सबसे पहले यह कहा कि तमिल भाषा का संस्कृत से कोई संबंध नहीं? सबसे पहले किसने लिखा कि द्रविड़ अलग मानव-समुदाय है जो शेष भारतवासियों से अलग है? किसने आर्य-द्रविड़ विभेद की प्रस्थापना दी? सर्वप्रथम यह दावा

कसिने कयिा कि तमलि शैव-मत पर मूलत: ईसाई प्रभाव है? कसि पुस्तक में सबसे पहले यह लखिा मलिता है कि दक्षणि का भक्त-आंदोलन कसिी वैष्णव नहीं, बल्कि बाइबलि के 'सरमन ऑफ द माउंट' से प्रेरति था? वह कौन था जसिने सबसे पहले दावा कयिा कि तमलि समाज की वर्तमान कमयिां हदिू संस्कृति और वैदकि मत का दुष्प्रभाव है?

अंतत: यह कसिका सुझाव था कि तमलि भाषा, संस्कृति, समाज को हदिू, वैदकि, संस्कृत दुष्प्रभावों से 'मुक्त' करके 'सभ्य धर्मों' यानी ईसाइयत, इस्लाम के साथ मोर्चा बनाना चाहि□ या उसमें वलीन हो जाना चाहि□ ? हम पाते हैं कि उपर्युक्त सभी बातें प्रसदि्ध ईसाई मशिनरी वदि्वानों और तत्कालीन ब्रटिशि शासकों के लेखन में ही मलिती हैं□

फ्रांससि □लसि, □लेक्जेंडर कैम्पबेल, बशिप रॉबर्ट काल्डवेल, रेवरेंड जॉन स्टीवेंसन, ब्रायन हॉजसन और जॉर्ज उग्लो पोप कुछ प्रमुख नाम हैं जनिकी रचनाओं में ऊपर रखे ग□ सभी प्रश्नों का सवसि्तार उत्तर मलिता है□ उन्हें कतिना महत्त्व मलिा, यह इससे भी दखि सकता है कि चेन्नई के सबसे महत्त्वपूर्ण पर्यटक स्थल मरीना समुद्रतट पर जनि दो वभिूतयिों के शानदार मूर्त-िस्तंभ लगे हैं वे बशिप काल्डवेल और जॉर्ज पोप हैं□ कसि सेवा के लि□ द्रवडि□ राजनीत करने वालों ने उन्हें इतना सम्मानति स्थान दयिा?

दुखद उत्तर है कि तमलिों को शेष भारत से अलग, श्रेष्ठ मानने की मानसकिता उन्हीं पादरयिों की देन है, जसिके कारण आज भी तमलि नेतागण संस्कृत, हदिी और भारतीयता का वरिोध करते रहे हैं□ क्या यह हैरत की बात नहीं कि स्वतंत्र होने के सात दशक बाद भी तमलि नेता उन मशिनरयिों को ही अपना मार्गदर्शक माने हु□ हैं, जनि्होंने ईसाइयत-वसि्तार का अपना लक्ष्य कभी नहीं छपिाया?

तमलि राजनीत पुरानी, झूठी रू□यिों में जक□ी हुई है□ उस पर श्रेष्ठता की, अलगाव की, संस्कृत-हदिी के वरिोध की भावना औपनवेशकि-मशिनरी सत्ताधारयिों की देन है□ कसिी अपने वदि्वान या मार्गदर्शक ने उन्हें यह मथि्या वचिारधारा नहीं दी है□ सर्वाधकि लोकप्रयि और सम्मानति तमलि ग्रंथ थरिुकुरल (संक्षेप में कुरल) का मूल दर्शन रामायण और महाभारत से तनकि भनि्न नहीं है□ पारंपरकि तमलि संतों ने वही गीत गा□ हैं जो तुलसी, मीरा और कबीर में भी यथावत मलिते हैं□ आज भी तमलिनाडु में ही सर्वाधकि संख्या में, अट्ठाईस हजार, शवि-मंदरि हैं, जनिमें सैक□ों वर्षों से वही अभ्यर्थना होती है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक हरेक शवालय में की जाती है□ शंकराचार्य, थरिुवल्लूवर, नारायण गुरु, रमण महर्ष या सुब्रह्मण्यम भारती- कसिी की शक्षिाओं में उन वैदकि ऋचाओं से दूरी नहीं मलिती, जनिसे संपूर्ण भारत अनुप्राणति होता रहा है□ समय की मार और वदिेशी आक्रमणों के कुठाराघात से वे शक्षिा□ं समय-समय पर दुर्बल जरूर हुरइं लेकनि उनका प्रभाव कभी खत्म नहीं हुआ□

अब तमलि राजनीत को अपनी रू□यिों की समीक्षा करने का साहस दखिाना चाहि□ □ तभी उसे अपनी जनता का सच्चा नेतृत्व करने का अधकिार मलि सकता है□ मथि्या और ज□ धारणाओं पर आधारति राजनीत सदैव नहीं चलती रह सकेगी□ तैश और अंध-वरिोध नकारात्मक राजनीत के लक्षण हैं जो आज नहीं तो कल अपना मूल्य खो देंगे□ वैसे भी, अगर तमलि भाषा का मान-सम्मान बचाना है तो उसे खतरा अंगरेजी से है, संस्कृत या हदिी से नहीं, जो उसके अपने हैं□ इस सच्चाई को तमलि जनता समझने भी लगी है□ क्या उसके मार्गदर्शक नहीं समझ सकते?

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta